विनोबा कथावली

■ वर्ष : द्वितीय ■ अंक : 1 ■ अगस्त 2025

विनोबा ऐप ने शिक्षिका को बनाया टेक सैवी

घोटी स्टेशन (नासिक): "मैं स्मार्टफोन का ज्यादा इस्तेमाल नहीं करती थी। सोशल मीडिया से भी दूर ही रहती थी, क्योंकि मुझे लगता था कि मैं उन फीचर्स और ऐप्स का उपयोग नहीं कर पाऊंगी। लेकिन जब मैंने विनोबा ऐप का इस्तेमाल करना शुरू किया, तो अहसास हुआ कि ऐप्स कितने सहज और उपयोगी हो सकते हैं। अब सोशल मीडिया को लेकर मेरा डर खत्म हो गया है। मैं न केवल विनोबा का प्रभावी उपयोग कर रही हूँ, बल्कि अन्य उपयोगी ऐप्स को भी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में धीरे धीरे शामिल कर रही हूँ।"

यह हैं श्रीमती वैशाली खैरनार, जो नासिक जिले के घोटी स्टेशन जिला परिषद स्कूल में शिक्षिका हैं। जब विनोबा टीम उनसे मिलने गई, तो उन्होंने बताया कि पहले भी वे अपने स्कूल में कई शिक्षा गतिविधियाँ लागू करती थीं लेकिन विनोबा ऐप से मिले प्रोत्साहन और प्रेरणा से उनकी कार्यशैली अधिक प्रभावी हो गई। इससे उनका छात्रों और अभिभावकों के साथ जुड़ाव मजबूत हुआ।

2019 में जब उन्होंने इस प्राथमिक शाला में काम शुरू किया, तो उन्हें स्कूल की चारों कक्षाओं को अकेले ही संभालना पड़ता था। अस्थायी सहायक शिक्षकों के साथ काम करते हुए उन्होंने विद्यालय के छात्रों की संख्या 12 से बढ़ाकर 30 कर दी। कुछ ही महीनों पहले एक स्थायी शिक्षक की नियुक्ति हुई है, जिससे उन्हें थोड़ी राहत मिली है।

वैशाली जी कहती हैं कि नाशिक में पिछले साल आया विनोबा ऐप उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। विनोबा ऐप के तहत चलने वाली विभिन्न क्लब गतिविधियों ने कमजोर आर्थिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि के बच्चों में आत्मविश्वास जगाने में मदद की और उन्हें प्रतियोगिता में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। खास तौर पर स्पोकन इंग्लिश और महावाचन के तहत बच्चे अपनी किताबों में लिखे सभी शब्द पढ़ने लगे, सोचने लगे, खुद ही वाक्य बनाने लगे, पूरे वाक्य लिखने लगे।

विनोबा ऐप पर अपलोड करने के लिए उन्होंने छात्रों की परफॉर्मेंस के जो वीडियो बनाए, वो अभिभावकों के व्हाट्सएप ग्रुप पर डालकर उनकी भागीदारी बढ़ाने में काम आए। विडिओ देखकर अभिभावक भी उत्साहित हुए और बच्चों को अधिक अवसरों के लिए तैयार करने लगे। इस नए पढ़ाई के माहौल में लगभग हर बच्चा अंग्रेज़ी में खुद का परिचय देने लगा, सभी फलों व सब्जियों के नाम पढ़ने लगा। वैशाली जी ने कहा, "एक शिक्षक को इससे जो संतोष और खुशी मिलती है, उसे शब्दों में कहा नहीं जा सकता।"

वैशाली जी ने बताया कि विनोबा ऐप से उन्हें पता चला कि खंबाला की एक शिक्षिका विज्ञान और गणित को रोचक बनाने के लिए खास कार्यक्रम आयोजित करती थीं, गणित और विज्ञान दिवस जैसे आयोजनों के माध्यम से छात्रों में रुचि जगाती थीं। "मैंने उनसे बहुत सी रोचक विधियाँ सीखी। अब मेरे स्कूल में भी गणित और विज्ञान को लेकर बच्चों का डर खत्म हो गया है। वे अब इन्हें उत्साह के साथ सीखते हैं।"

घोटी स्टेशन जिला परिषद स्कूल के शिक्षक विनोबा के माध्यम से नई प्रेरणाएँ ले रहे है। वैशाली जी के शब्दों में, "विनोबा ऐप ने यहाँ बहुत बड़ा बदलाव लाया है। अब तो पूरे राज्य के शिक्षक एक-दूसरे से सीख रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं और अब छात्र भी हर दिन कुछ नया सीखने के लिए उत्सुक रहते हैं।"

यह बदलाव सिर्फ एक स्कूल तक सीमित नहीं है। यह एक ऐसी लहर है, जो शिक्षा में नवाचार, तकनीक और सामुदायिक सहयोग को जोड़कर दूरदराज के विद्यालयों को भी नई दिशा दे रही है। ■

'आर्थिक स्थिति पढ़ाई में बाधा नहीं बन सकती'

हमारा लक्ष्य बोर्ड परिणामों में सुधार से कहीं बढ़कर है। छात्र पहली, छठी और नौवीं जैसी शुरुआती कक्षाओं से ही नियमित स्कूल आने और पढ़ने की आदत डालें, तो 10वीं और 12वीं के परिणाम अपने आप सुधरेंगे। हम मानते हैं कि सीखने की इच्छा हो तो आर्थिक स्थिति बाधा नहीं बन सकती।

पृष्ठ 2

शुद्ध देसी शिक्षा का स्वाद

विनोबा विशेष

जब उनसे कुछ दोस्तों ने पूछा कि उन्होंने अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल क्यों नहीं भेजा, तो उन्होंने कहा, "क्यों भेजूं? मेरे बच्चों को भी तो सबसे अच्छी शिक्षा चाहिए!"

पृष्ठ 4, 5 6

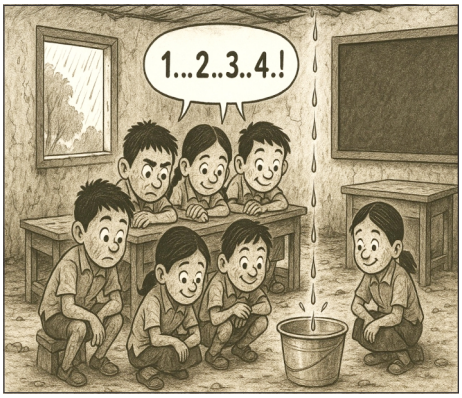

'आर्थिक स्थिति पढ़ाई में बाधा नहीं बन सकती'

धमतरी: जिला शिक्षा अधिकारी श्री टी. आर. जगदल्ले, जो वर्ष 2024 से यहाँ कार्यरत हैं, जिले के 1,490 सरकारी स्कूलों की बागडोर संभाल रहे हैं। इनमें 168 हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल शामिल हैं। हाल ही में उन्होंने टीम विनोबा के साथ 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं और जिला शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं पर बात की।

धमतरी में बोर्ड परीक्षा के मौजूदा हालात

इस शैक्षणिक वर्ष में हमारे कुल परिणाम पिछले साल से कम रहे। इसकी कई वजहें हमने तलाशी हैं। मुख्य तौर पर, जागरूकता की कमी, शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या और छात्रों में पढ़ाई के प्रति रुचि की कमी एक बड़ी समस्या बनकर उभरी है। यह समस्या खासकर ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में ज्यादा देखने को मिलती है, जहाँ छात्रों की उपस्थिति अक्सर अनिश्चित रहती है।

हमें एक और बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ता है – समाज के कुछ ऐसे तत्व हैं, जो सक्रिय रूप से माता-पिता और बच्चों को स्कूल जाने से रोकते हैं। वे यह दावा करते हैं कि स्कूली शिक्षा उनके बच्चों के लिए बेकार है। कभी-कभी कमज़ोर आर्थिक स्थिति माता-पिता को हतोत्साहित कर देती है। नैतिक आधार की कमी भी बच्चों और माता-पिता दोनों को शिक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से विचलित कर सकती है। जहाँ हमारे 13 हाई स्कूल और 5 हायर सेकेंडरी स्कूल 100 प्रतिशत उत्तीर्ण दर हासिल कर चुके हैं, वहीं 16 स्कूल ऐसे भी हैं जहाँ परिणाम 50 प्रतिशत से भी कम रहे हैं। इस वर्ष इन्हीं स्कूलों पर मेरा खास ध्यान रहेगा।

परिणामों में सुधार के लिए व्यापक रणनीतियाँ

हमने इस वर्ष जिला प्रशासन की भागीदारी बढ़ा दी है। जिला कलेक्टर, जिला पंचायत CEO, BEO, CAC, BRC और प्रिंसिपल - सभी मिलकर बोर्ड परीक्षा के समग्र परिणामों को बेहतर बनाने के तरीकों पर मंथन कर रहे हैं।

एक महत्वपूर्ण पहल के अंतर्गत हमने प्रत्येक गाँव के स्कूल के लिए व्याख्याताओं को नोडल अधिकारी के रूप में नियुक्त किया है। वे महीने में दो बार माता-पिता और छात्रों से मिलते हैं ताकि उनकी समस्याओं को समझ सकें। जरूरत पड़ने पर, वे 'चौपाल' यानी सामुदायिक चर्चाएँ भी आयोजित करते हैं ताकि बच्चों और माता-पिता दोनों में पढ़ाई के प्रति रुचि की कमी से उत्पन्न मुद्दों को सुलझाया जा सके। स्कूली शिक्षा के बारे में माता-पिता को गुमराह करनेवाले तत्वों से निपटकर वे गाँव में एक सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने का भी काम करते हैं। उद्देश्य यह है कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।

श्री टी. आर. जगदल्ले
जिला शिक्षा अधिकारी, धमतरी

शिक्षकों का असाधारण कार्य

मैंने शिक्षकों द्वारा स्कूली शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ वाकई प्रेरणादायक कार्य देखे हैं। मगरलोड ब्लॉक के सिंगपुर हाई सेकेंडरी स्कूल के प्रधानाध्यापक ने माता-पिता को प्रेरित कर उनमें अविश्वसनीय जागरूकता लाई है। उनके प्रयासों से 'शाला प्रवेश उत्सव' के दिन पूरा गाँव फैंसी कपड़ों में इकट्ठा हुआ, जो किसी उत्सव से कम नहीं था। ग्रामीणों ने बच्चों को नियमित स्कूल भेजने का वादा भी किया, जो दूरदराज के वन क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि है। इस गाँव और स्कूल को राज्यभर में बहुत प्रसिद्धि और सम्मान मिला। इसी तरह, कुरुद ब्लॉक के एक SAGES स्कूल के प्रधानाध्यापक ने भी प्रेरित और अनुकूल सीखने का माहौल बनाने में उत्कृष्ट कार्य किया है।

'इस केंद्रित प्रयास से हमारा नया शैक्षणिक सत्र पूरी उपस्थिति के साथ शुरू हुआ, जो एक बहुत ही सकारात्मक संकेत है।

हमने 'उपचारात्मक शिक्षा', पर भी जोर दिया है, जिसमें हम कमजोर छात्रों की पहचान कर उनके लिए अतिरिक्त कक्षाएं लेते हैं। शिक्षक लगातार उनकी चुनौतियों का अवलोकन करते हैं, नियमित रूप से उनके माता-पिता से मिलते हैं, उनकी कमजोरियों को समझकर उन्हें सकारात्मक सोच के साथ प्रोत्साहित कर पाते हैं। ये कक्षाएं स्कूल स्तर पर आयोजित की जाती हैं।

विनोबा ऐप पिछले साल से हर स्कूल का डेटा आसानी से उपलब्ध कराने में अत्यंत सहायक रहा है, जिससे सुधार को मापना बहुत सरल हो गया है। जिला स्तर पर, हमने बोर्ड परीक्षा के छात्रों के अभ्यास के लिए एक विशेष प्रश्नावली तैयार की है। इस साल से खास 10 वीं और 12 वीं के छात्रों के लिए एक मॉक टेस्ट भी आयोजित कर रहे हैं।

हम 'बस्ता मुक्त शनिवार' का भी उपयोग करते हैं जहाँ छात्र बारी-बारी से विषयों को पढ़ाते हैं। यह उनकी समझ को मजबूत करता है और उन्हें अपनी तैयारी का आकलन करने में मदद करता है। इसके अलावा, हमारे विभिन्न विकासखंडों में 170 प्रोफेशनल लर्निंग कमेटी (पीएलसी) के सदस्य हैं। ये पीएलसी शिक्षकों को विभिन्न दृष्टिकोणों और सहयोगात्मक शिक्षा को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और प्रेरणा का ध्यान

हम छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और प्रेरणा पर खास ध्यान देते हैं। उपचारात्मक कक्षाओं में कमजोर बच्चों को यह नहीं कहते कि वे कमजोर हैं; बल्कि उन्हें सकारात्मक सोच के साथ प्रोत्साहित करते हैं।

पढ़ाई के अलावा, 'बस्ता मुक्त शनिवार' पर हम 'नैतिक शिक्षा' पर जोर देते हैं। यह बच्चों को अपनी जिम्मेदारियाँ समझने में मदद करती है, क्योंकि नैतिक मूल्यों की कमी कभी-कभी बच्चों और अभिभावकों दोनों की सोच को भटका सकती है।

नैतिक शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं है; इसमें शिक्षकों और माता-पिता के साथ व्यवहार, दूसरों के प्रति सहायक होना, साधन संपन्न बनना और क्षेत्र में आम नशे की लतों से दूर रहना भी शामिल है। यह समग्र दृष्टिकोण बच्चों पर अकादमिक दबाव कम कर उनके व्यक्तिगत विकास और अनुशासन पर केंद्रित है।

सीखने की दीर्घकालिक संस्कृति का निर्माण

हमारा लक्ष्य बोर्ड परिणामों में सुधार से कहीं बढ़कर है। हम चाहते हैं कि छात्र पहली, छठी और नौवीं जैसी शुरुआती कक्षाओं से ही नियमित स्कूल आने और पढ़ने की आदत डालें, जिससे 10वीं और 12वीं के परिणाम अपने आप सुधरेंगे। हम मानते हैं कि सीखने की इच्छा हो तो आर्थिक स्थिति बाधा नहीं बन सकती; हमारे नोडल अधिकारी व्यक्तिगत रूप से लोगों को यही बात समझाते हैं।

'नैतिक शिक्षा' भी इस दीर्घकालिक लक्ष्य का अहम हिस्सा है। यह बच्चों में जिम्मेदारी, अनुशासन, ईमानदारी, परिणाम-उन्मुखीकरण (result-orientation) और समय का सदुपयोग सिखाकर उनका चरित्र गढ़ती है। बच्चों को सिर्फ परीक्षाओं के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए तैयार करना है – सकारात्मक व्यवहार, सहायकता और साधन संपन्नता के साथ।

आनेवाले वर्षों में सभी स्कूलों के 90 प्रतिशत से अधिक परिणाम हासिल करना है, जो सीखने और चरित्र निर्माण के इस गहरे सांस्कृतिक बदलाव से प्रेरित है। मेरा मानना है कि अगर 18 स्कूल उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त कर सकते हैं, तो सभी स्कूल यह क्यों नहीं कर सकते? ■

अमरावती: 16 जुलाई 2025 को अमरावती नगर निगम (AMC) में आयुक्त श्रीमती सौम्या शर्मा (IAS) और ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के बीच MoU हस्ताक्षरित कर 'आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम' का औपचारिक शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर नगर निगम के शिक्षा अधिकारी डॉ. प्रकाश मेश्राम और 40 तंत्र स्नेही शिक्षक उपस्थित थे।

नागपुर: जिला स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में DIET प्राचार्य डॉ. हर्षलता बुराडे ने 12 शिक्षकों को विनोबा पोस्ट ऑफ द मंथ (POM) पुरस्कार से सम्मानित किया, 2 शिक्षकों को 'समर कॉन्टेस्ट पुरस्कार', और 5 शिक्षकों को लाइब्रेरी बैग देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर DIET के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

भंडारा: जिला परिषद CEO श्री मिलिंद कुमार साल्वे ने 7 शिक्षकों को POM, 3 शिक्षकों को लाइब्रेरी बैग, और 12 शिक्षकों को क्लब विनर पुरस्कारों से सम्मानित किया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

गडचिरोली: जिला परिषद CEO श्री सुहास गाडे ने 10 शिक्षकों को POM, 2 शिक्षकों को 'मॉर्निंग असेंबली' और 2 को 'महवाचन' गतिविधियों के लिए सम्मानित किया। इस अवसर पर सहायक कलेक्टर श्री राजीव यादव, शिक्षाधिकारी बाबासाहेब पवार और अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

जांजगीर चांपा: कलेक्टर श्री जनमेजय महोबे ने जिले के 9 शिक्षकों को POM पुरस्कार से सम्मानित किया। इस अवसर पर DEO श्री अश्वनी कुमार भारद्वाज, DMC श्री राजकुमार तिवारी और शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

बस्तर: जिला स्तर पर आयोजित एक कार्यक्रम में जिला कलेक्टर श्री हैरिस एस. (IAS) ने जिले के 5 शिक्षकों को पोस्ट ऑफ द मंथ (POM) पुरस्कारसे सम्मानित किया। इस अवसर पर CEO श्री प्रतीक जैन (IAS), DEO, DMC और अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

रायपुर: जिला स्तर पर आयोजित एक कार्यक्रम में APC श्री अरुण शर्मा, APC श्रीमती पूनम तिवारी और APC श्रीमती रागिनी अवस्थी ने जिले के 4 शिक्षकों को POM पुरस्कार और 3 शिक्षकों को समर कॉन्टेस्ट के लिए सम्मानित किया।

दुर्ग: जिला स्तर पर आयोजित एक कार्यक्रम में DEO श्री अरविंद मिश्रा ने जिले के 3 शिक्षकों को POM पुरस्कार से सम्मानित किया। इस अवसर पर ADPO श्री जे. मनमोहन और APC श्री विवेक शर्मा उपस्थित रहे।

'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बच्चों का अधिकार है'

रुईखेडे (जलगांव): "अभिभावक अक्सर यह गलती करते हैं कि अच्छा स्कूल मतलब, बाहर से चमकता-दमकता, बड़ी फीस वाला कोई प्राइवेट स्कूल...लेकिन अगर हम सिर्फ अपनी प्रतिष्ठा के लिए बच्चों को निजी स्कूलों में भेजते हैं, तो यह बच्चों के साथ अन्याय है। यह बात मैं अपने अनुभव से कह रही हूँ।"

जलगांव जिले के रुईखेडे जिला परिषद स्कूल की शिक्षिका श्रीमती नीता काकर-दुट्टे से जब हमारी मुलाक़ात हुई, तो उन्होंने ऐसी बात कही जो सीधे दिल में उतर गई। उन्होंने कहा कि अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बच्चों का अधिकार है।

हमे जब पता चला कि उन्होंने अपने बच्चों को निजी स्कूलों में न डाल कर सरकारी स्कूल में डाला है, तब हमने उनसे पूछा कि ऐसा क्यों। वह हंसते हुए बोलीं, "अरे भाई, सब जानते हैं कि सरकारी स्कूल के शिक्षक अच्छी तरह से प्रशिक्षित होते हैं, कठिन परीक्षाओं के बाद उनका चयन होता है। उन्हें बच्चों को उनकी सीखने की क्षमता के अनुसार पढ़ाने की तकनीकें पता होती हैं। तो, मैंने वही चुना जो मेरे बच्चों के लिए सबसे अच्छा था।"

उनके पति और सहयोगी शिक्षक श्री प्रमोद दुट्टे ने बताया, "हमने अपनी बड़ी बेटी को एक निजी स्कूल में भेजा था क्योंकि वही घर के पास था। हमे जल्द ही समझ आ गया कि निजी स्कूल केवल बाहर से आकर्षक दिखते हैं, शिक्षा की गुणवत्ता का वहाँ कोई भरोसा नहीं होता।" फिर उन्होंने अपने जुड़वां छोटे बच्चों को KG के बाद रुईखेडे के जिला परिषद

स्कूल में पहली कक्षा में दाखिला दिलाया। "अब हमें अपनी ही निजी स्कूल में पढ़ी बेटी और जिला परिषद स्कूल में पढ़नेवाले छोटे बच्चों के पढ़ाई के स्तर में अंतर साफ दिखाई देता है।"

प्रमोद जी ने कहा कि 'क्लासी' दिखने की कोशिश में बच्चों को निजी स्कूलों में डाल दिया जाता हैं। वे जैसे तैसे प्राथमिक कक्षाएं पास कर लेते हैं, फिर छटवी या आठवी कक्षा में आते आते वे पढ़ाई में रुचि खोने लगते हैं। तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। "तब वे अपनी परेशानी बता नहीं पाते, और फिर आत्म-संदेह और आत्मविश्वास की कमी लेकर बड़े होते हैं, जो बहुत घातक है।"

नीता जी ने कहा कि सरकारी स्कूलों में बच्चे अंग्रेजी भी सीख सकते हैं, और कई बार निजी स्कूलों से बेहतर सीख सकते हैं; इसी तरह, प्रतिस्पर्धी दुनिया में सफल होने के उद्देश्य से छात्रों की बढ़ियाँ तैयारी करवाई जाती है; सरकार शिक्षकों को नई चीजें सिखाने के लिए लगातार पहल करती है, नियमित रिफ्रेशर ट्रेनिंग देती है। कई गैर-सरकारी संगठन - जैसे ओपन लिंक्स फाउंडेशन - भी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, जो शिक्षकों और छात्रों दोनों की मदद करते हैं।

उन्होंने कहा, "आजकल तकनीक के कारण हम वीडियो और व्हाट्सएप के माध्यम से हमारे स्कूल के शिक्षा की गुणवत्ता अभिभावक और अन्य लोगों को दिखा सकते हैं, उन्हें सरकारी स्कूलों का महत्व समझा सकते हैं। 'विनोबा' कार्यक्रम भी हमें इस काम में मदद करता है। इन सुविधाओं का फायदा उठाकर हमें ज़्यादा से ज़्यादा लोगों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहिए।"

अंत में नीता जी ने एक रोचक स्मृति हमें बताई। जब वह अपने बच्चों को निजी स्कूल से निकाल रही थीं, तब उस स्कूल की शिक्षिका ने उनसे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रही हैं, उनकी बेटी तो बहुत अच्छी छात्रा है, तब नीता जी ने गर्व से कहा था, "इसीलिए तो उसे अच्छे स्कूल में - जिला परिषद स्कूल में –दाखिल करने जा रही हूँ।" ■

शुद्ध देसी शिक्षा का स्वाद

गयानगर (दुर्ग): श्री गिरवरलाल साहू दुर्ग जिले के शासकीय गयाबाई प्राथमिक शाला गयानगर में पिछले 10 साल से सहायक शिक्षक हैं। गहरी सोच, मुस्कुराता हुआ चेहरा, बातों में ऊर्जा और आत्मविश्वास ऐसा कि व्यवस्था में भरोसा दिलाने की तैयारी भी।

गिरवरलाल जी उन चंद शिक्षकों में से हैं, जो सरकारी स्कूल को श्रेष्ठ पर्याय मानते हैं। टीम विनोबा से एक बातचीत में वे कहते हैं, "कई लोग सोचते हैं कि सरकारी स्कूल के शिक्षक स्वयं अपने बच्चों को निजी स्कूलों में पढ़ाते हैं क्योंकि उन्हें अपने सरकारी स्कूल में भरोसा नहीं होता। मैं उनकी यह गलतफहमी दूर किए देता हूँ। मैं अपने दोनों बच्चों को अपने गांव विनायकपुर के सरकारी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजता हूं।"

अब उन्हें कोई फिक्र नहीं, वे कहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि सरकारी स्कूलों में जो शिक्षक कार्यरत हैं वे पूरी पढ़ाई के बाद, शिक्षक पात्रता परीक्षा (TET) पास कर के ही फिर शिक्षक बनते हैं; उसके बाद भी अध्यापन के कई प्रशिक्षण भी प्राप्त करते हैं। "ऐसे तैयार शिक्षक ही बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।"

गिरवरलाल जी कहते हैं कि इसके अलावा, सरकारी स्कूलों में बच्चों को किताबें, यूनिफॉर्म, मिड-डे मील मिलते हैं... और अब तो टेक्नोलॉजी भी आ गई

है! FLN, Read India, 'अंगनामा शिक्षा', 'नींव'...और अब 'विनोबा' जैसे कार्यक्रम आ गए हैं। उनका कहना है कि इन योजनाओं और गतिविधियों कि वजह से अब सरकारी स्कूल अकेले मास्टरजी के भरोसे नहीं रहे, बल्कि अब गांववाले भी स्कूल के विकास में शामिल हो रहे हैं।

गिरवरलाल जी खुद भी बारहवीं तक सरकारी स्कूलों में पढ़े हैं। कहते हैं, "हमारे स्कूल के शिक्षक बड़े प्रेम से पढ़ाते थे। शायद इसीलिए, कब मन बना कि मुझे भी शिक्षक बनना है, पता ही नहीं चला।" शिक्षक बनकर नवाचारी और सरल तरीकों से बच्चों के सीखने सीखाने को एक नई गति देने का निर्णय विद्यार्थी दशा में ही हो गया था।

जब वे शिक्षक बनने की पढ़ाई कर रहे थे, चारों ओर प्राइवेट स्कूल 'इंग्लिश मीडियम' के बोर्ड लगा कर अभिभावकों और शिक्षकों को आकर्षित कर रहे थे, लेकिन गिरवरलाल जी पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। कहते हैं, "सालों से घर का पौष्टिक खाना भर पेट खाया हो, तो बाहर के चटपटे खाने की खुशबू नहीं ललचाती।"

शिक्षक बनने के बाद से आज तक बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए वे कितने ही नए प्रयोग रोज़ कर रहे हैं, जिससे उनके छात्रों के परीक्षा परिणाम और जीवन कौशल में सतत सुधार हो रहा है। बच्चा सरल तरीके से सीखे इसके लिए उनकी बनाई गतिविधियाँ इतनी कारगर रही कि शिक्षा विभाग ने एक अधिगम आधारित पुस्तक में उनकी गतिविधियों को शामिल कर लिया। उन्हें उनके 'कबाड़ से जुगाड' गतिविधियों के लिए और नवाचारी अध्यापन विधियों के लिए 'उत्कृष्ट शिक्षक' व 'नवाचारी शिक्षक' के तौर पर भी सम्मानित किया गया।

गिरवरलाल जी अंत में एक मजेदार बात बताते हैं। जब उनसे कुछ दोस्तों ने पूछा कि उन्होंने अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल क्यों नहीं भेजा, तो उन्होंने कहा, "क्यों भेजूं? मेरे बच्चों को भी तो सबसे अच्छी शिक्षा चाहिए!" और फिर खुद ही ठहाका लगा दिया।

ये ठहाका किसी मज़ाक का नहीं था, बल्कि इशारा था, बदलती सोच का। एक ऐसी सोच जो निर्माण करने के लिए टीम विनोबा शिक्षकों और प्रशासकों के साथ लगभग एक दशक से निरंतर कार्य कर रही है।

'शिक्षा वो जो ज़मीन से जुड़ी हो'

मुख्याध्यापक दिलीप चौधरी कहते हैं, सरकारी स्कूलों में सच्ची, ज़मीनी और ज़िंदगी से जुड़ी शिक्षा मिलती है।

कोंबड़वाडी (धाराशिव): जब भी समाज में कोई गहरा और सच्चा बदलाव आया है, उसकी शुरुआत हमेशा स्वयं से हुई है। जिला परिषद प्राथमिक शाला, कोंबड़वाडी के मुख्याध्यापक श्री दिलीप चौधरी ऐसे ही परिवर्तनकारी शिक्षकों में से एक हैं। चलिए — सुनते हैं उनकी कहानी, उन्हीं की जुबानी...

जब मेरी बेटी स्कूल जाने की उम्र में आई, तो लोगों ने मुझसे वही सवाल पूछा जो अक्सर सरकारी स्कूलों के शिक्षकों से पूछा जाता है -- "क्या आप अपनी बेटी को भी सरकारी स्कूल में पढ़ाएंगे?" मेरा जवाब बहुत सीधा था — "हाँ, क्योंकि मैं उसे वही शिक्षा देना चाहता हूँ, जो मैं गाँव के गरीब बच्चों को दे रहा हूँ।"

ये कोई ज़िद नहीं थी, न ही कोई दिखावा। ये एक सोच थी, जो मैंने अपने अनुभवों से गढ़ी थी। क्योंकि अध्यापन केवल एक नौकरी नहीं है। यह एक राष्ट्रीय कर्तव्य है।

शिक्षक के नाते मुझे एक एक छात्र को – मेरी बेटी को भी – अच्छा और सजग नागरिक बनाना है ...और आप अगर करीब से देखें तो समझेंगे कि यह काम हमारी जिला परिषद की स्कूलों में बहुत अच्छे तरीके से हो रहा है। सरकारी स्कूलों में सच्ची, ज़मीनी और ज़िंदगी से जुड़ी शिक्षा मिलती है — और वही शिक्षा सबसे ज़रूरी है।"

इसी तरह, मैं मानता हूँ कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही होनी चाहिए, नहीं तो शिक्षा अधूरी है। मेरी बेटी जिला परिषद स्कूल में सात साल से पढ़ रही है। वह मातृभाषा में पक्की है, उसकी समझ गहरी है, सोच और अभिव्यक्ति स्पष्ट है, और उसे अपने

आसपास की दुनिया से जुड़ने की क्षमता मिल रही है।

सरकारी स्कूलों पर मेरा यह विश्वास कोई अचानक नहीं आया है। मैं पिछले 22 वर्षों से दूरस्थ स्कूलों में पढ़ा रहा हूँ, जहाँ बच्चों के पास शिक्षा का दूसरा विकल्प नहीं है। शिक्षा को रोचक बनाने के लिए नई नई रचनात्मक विधियों का उपयोग करता हूँ। बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के छात्रवृत्ती और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए स्कूल के बाद नियमित

अभ्यास परीक्षाओं का आयोजन करता हूँ। उद्देश्य केवल एक, कि हर छात्र को उत्कृष्टता हासिल करने का अवसर मिले। इससे मेरे कई छात्र इन परीक्षाओं में सफल हुए हैं, और उनके लिए नए शैक्षिक अवसरों के द्वार खुल गए हैं।

मेरी बच्ची मुझे यह सब करते हुए देख रही है। वो देखती है कि कैसे यहाँ के शिक्षक परिवर्तन के प्रयास पूरे गाँव में भी चलाते हैं, जैसे हमने गांव को तंबाकू मुक्त बनाने के लिए एक अभियान शुरू किया था और वो सफल भी हुआ। यह सब भी तो शिक्षा है। ये उसे निजी स्कूल में कैसे मिलेगी?

सौभाग्य से मेरे काम को पहचान भी मिली — मुझे तालुका, जिला और राज्य स्तर पर आदर्श शिक्षक पुरस्कार मिले — लेकिन उससे भी ज़्यादा संतोष इस बात का है कि मैं जो सिखाता हूँ, वही खुद भी जीता हूँ।

मेरे इस कार्य में विनोबा ऐप का साथ बहुत ही मूल्यवान सिद्ध हुआ है। इसके द्वारा मैं घर बैठे यह विचार दूसरे शिक्षकों तक पहुंचा सकता हूँ। मेरे जैसा सोचनेवाले शिक्षक अगर कहीं हैं, तो उनसे जुड़ सकता हूँ। विनोबा ऐप छात्रों के सर्वांगीण विकास को केंद्र में रखकर कार्य कर रहा है, इसलिए इससे मिलती सराहना मेरे लिए भी बहुत मायने रखती है।

दिलीप जी की सोच और अपनी भूमिका के प्रति अटूट समर्पण देखकर विनोबा कार्यक्रम का उद्देश्य सार्थक होता दिखाई देता है। ■

नई शुरुआत

"कभी-कभी एक अच्छा विचार एक पूरी पीढ़ी को बदल सकता है। कनाडा जैसे देशों में स्कूल के बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ समाज सेवा के भी घंटे पूरे करते हैं — ताकि वे जिम्मेदार नागरिक बन सकें। क्या हमारे सरकारी स्कूलों में भी ऐसा कुछ हो सकता है? इस सवाल का जवाब खोजती है धनगांव के स्कूल की यह कहानी..."

एक बैगलेस सोच

धनगांव के जिला परिषद स्कूल में इस साल कुछ नया हो रहा था।

इस शैक्षणिक सत्र की शुरुआत से ही प्रधानाध्यापक मिश्रा सर ने हर शनिवार को बैग लेस डे पर एक शांत-सी पहल शुरू की।

बच्चों को ऐसे छोटे-छोटे कामों में लगाना जो उन्हें अपने आस-पास की दुनिया से जोड़ें — बिना भाषणों और बड़ी बातें किए।

शुरुआत बहुत साधारण थी।

कुछ बच्चों ने पुराने बेंचों को रंगा,

कुछ ने स्कूल की दीवारें और कोने साफ किए।

एक समूह ने पुराने डब्बों से कूड़ेदान बनाए और उन्हें स्कूल परिसर में रख दिया।

धीरे-धीरे ये दायरा स्कूल से बाहर बढ़ने लगा।

बच्चे अपने मोहल्लों में घर-घर जाकर

सफ़ाई के लिए लोगों को प्रेरित करने लगे — साथ में उन्हें अपने बनाए हुए कूड़ेदान भी भेंट किए।

कुछ बच्चे शनिवार को पास के अनाथाश्रम में जाते — छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनाते, खाना परोसने में मदद करते।

एक समूह बुजुर्गों की सहायता में लगा — किसी के लिए राशन लाना, किसी का आँगन साफ़ करना या बस थोड़ा समय बैठकर उनसे बात करना।

किसी ने इसे 'समाज सेवा' नहीं कहा।

लेकिन धीरे-धीरे एक बदलाव दिखने लगा।

चौथे शनिवार तक बच्चे खुद सुझाव देने लगे—

"सर, झाड़ियों के पास पानी का एक बर्तन रख दें — पक्षियों के लिए?"

"बेंचों पर नाम न खोदें, वो ख़राब हो जाते हैं।"

"अगले हफ्ते मंदिर की सीढ़ियाँ साफ़ करें?"

"क्या हम बस स्टॉप की दीवार पर सुरक्षा संदेश लिख सकते हैं?"

मिश्रा सर मुस्कुरा दिए।

सोचने लगे —

"ये बस काम नहीं हैं, ये बदलाव की सोच के बीज हैं।"

कभी उन्होंने एक लेख में पढ़ा था — कनाडा में कक्षा 9 से 12 तक के बच्चों के लिए 40 घंटे की समाज सेवा अनिवार्य होती है।

वहीं से यह विचार आया था —

लेकिन उन्होंने बच्चों को कभी यह नहीं बताया।यह तो उनका छोटा-सा प्रयोग था।

शिक्षा सिर्फ किताबों से नहीं होती — अनुभव से भी होती है।

जो बैग लेस डे के नाम से शुरू हुआ था, वह धीरे-धीरे सोच की एक चुपचाप क्रांति बन गया।

कभी-कभी एक छोटा विचार सही ज़मीन पर बो दिया जाए — तो वह सोच बनकर उग आता है।

कूट प्रश्न 12 का उत्तर

1. विभेदित (Differentiated)
2. अनुभवात्मक (Experiential)

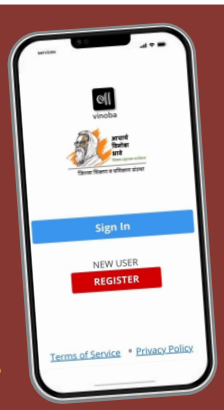

कविता

विनोबा ऍप

शिक्षा का दीपक

शिक्षा है दीपक, अंधेरों की हार,
ज्ञान की रोशनी, जीवन का आधार।
जग को दिखाए सच्चाई का पथ,
बिना शिक्षा के सब कुछ व्यर्थ।

शब्दों की सीढ़ी, सपनों की उड़ान,
शिक्षा से ही बनते हैं महान।
नर से नारायण का रूप है यही,
हर दिल में जागे जब समझ सही।

माँ की लोरी, गुरु का ज्ञान,
शिक्षा से होता साकार हर स्वप्न-संस्थान।
बातों में दम, सोच में परिपक्वता,
शिक्षा ही देती है असली स्वतंत्रता।

चलो जलाएं ज्ञान का दीप,
हर घर बने एक सुंदर तीर्थ।
जहाँ न रहे कोई अज्ञान की पीड़ा,
शिक्षा बने हर मन की धड़कन सी सीधा।

विल्सन पी. थॉमस
APC (Pedagogy)
समग्र शिक्षा,
जिला गरियाबंद

महाराष्ट्र का लक्ष्य: स्कूल नामांकन 41% से 70% तक बढ़ाना

मुंबई: महाराष्ट्र सरकार ने अगले चार वर्षों में स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा लक्ष्य तय किया है -- मौजूदा 41% के सकल स्कूल नामांकन अनुपात को बढ़ाकर 70% तक पहुँचाया जाए, जबकि माध्यमिक छात्रों की ड्रॉप आउट दर को 7.7% से घटाकर 4% किया जाएगा। ये महत्वाकांक्षी लक्ष्य राज्य के स्कूली शिक्षा विभाग और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (SCERT) द्वारा हाल ही में जारी एक ड्राफ्ट विजनरी डॉक्यूमेंट का हिस्सा हैं।

इस ड्राफ्ट में स्कूलों में डिजिटल तैयारी और आधुनिकीकरण की सिफारिश की गई है। इसमें 'बैगलेस डे' और डिजिटल स्कूलों की शुरुआत, टैबलेट और AI Learning टूल्स का वितरण, साथ ही कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा शुरू करने की बात कही गई है।

व्यावसायिक शिक्षा में ईवी टेक्नोलॉजी, डिजिटल मीडिया, एनिमेशन, हेल्थ केयर उपकरण और इंडस्ट्री 4.0 जैसे विषय शामिल होंगे। राज्य सरकार ने इस मसौदा दस्तावेज पर विभिन्न हितधारकों से सुझाव आमंत्रित किए हैं।

दस्तावेज में लघु अवधि (2025-29), मध्यम अवधि (2030-35) और दीर्घ कालिक (2036-47) लक्ष्यों के साथ एक रोडमैप भी उल्लिखित है। इसका मुख्य फोकस आधुनिक शिक्षण पद्धतियों (pedagogy), डिजिटल और जलवायु-लचीले बुनियादी ढांचे (climate-resilient infrastructure), तथा भारतीय मूल्यों और वैश्विक दक्षताओं पर आधारित पाठ्यक्रम पर है।

हालांकि PARAKH राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2024 की हालिया रिपोर्ट में सीखने की दक्षताओं के मामले में महाराष्ट्र के छात्रों ने राष्ट्रीय औसत से बेहतर प्रदर्शन किया है, फिर भी विजन डॉक्यूमेंट में कक्षा 3 तक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता में 100% हासिल करने की बात कही गई है। यह मसौदा राज्य के' विकसित महाराष्ट्र @2047' पहल का हिस्सा है।

महाराष्ट्र में फीस बढ़ोतरी पर लगेगी लगाम

कोचिंग-कॉलेज गठजोड़ पर भी नकेल कसने की तैयारी

मुंबई: महाराष्ट्र सरकार स्कूलों में मनमानी फीस वृद्धि को रोकने के लिए बड़ा कदम उठाने जा रही है। राज्य के शिक्षा मंत्री दादा भुसे ने बुधवार को विधानसभा में बताया कि सरकार महाराष्ट्र शिक्षा संस्थान (शुल्क विनियमन) अधिनियम, 2011 में संशोधन करने की योजना बना रही है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार राज्य में निजी कोचिंग कक्षाओं और कॉलेजों के बीच सांठगांठ पर शिकंजा कसने के लिए नया कानून भी लाने की तैयारी में है।

शिवसेना (यूबीटी) विधायक वरुण सरदेसाई ने विधानसभा में बताया था कि कुछ स्कूल भी एक ऐसी रणनीति अपना रहे हैं जहाँ वे आधिकारिक फीस तो कम रखते हैं, लेकिन अन्य मदों के लिए अतिरिक्त शुल्क वसूलते हैं। इस पर, शिक्षा मंत्री भुसे ने स्पष्ट किया कि स्कूलों द्वारा यूनिफॉर्म और स्कूल सामग्री को किसी विशेष दुकान से खरीदने पर जोर देना गलत है, और शुल्क विनियमन अधिनियम में निश्चित रूप से संशोधन किया जाएगा।

दिल्ली में 'सीएम श्री' स्कूलों को प्राथमिकता

दिल्ली कैबिनेट ने अपनी 10वीं बैठक में शिक्षा क्षेत्र में एक महत्वाकांक्षी पहल को मंजूरी दी है। यह ₹900 करोड़ का पैकेज स्कूल के बुनियादी ढांचे को उन्नत करने, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020को लागू करने और सीएम श्री स्कूलों में स्मार्ट कक्षाओं में तेजी लाने के उद्देश्य से है। बैठक के बाद एक प्रेस ब्रीफिंग में, शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने घोषणा की कि इस पहल की शुरुआत 75 सीएम श्री स्कूलों में 2,446 स्मार्ट ब्लैकबोर्ड स्थापित करने से होगी। अगले कुछ वर्षों में, इस योजना का विस्तार किया जाएगा और 2029-30 तक राजधानी भर में कक्षा 9 से 12 तक कुल 21,412 स्मार्ट कक्षाएं स्थापित की जाएंगी।

हरियाणा के स्कूलों में गूंजेंगे गीता के श्लोक

उत्तराखंड के बाद अब हरियाणा के स्कूलों में भी छात्र सुबह की सभा (मॉर्निंग असेंबली) में श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का पाठ करेंगे। यह पहल 18 जुलाई 2025 से शुरू हो गई है। हरियाणा स्कूल शिक्षा बोर्ड ने इस संबंध में राज्य के सभी स्कूलों के लिए निर्देश जारी किए हैं। इसके तहत, हरियाणा के सभी स्कूलों में सुबह की प्रार्थना सभा की शुरुआत श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों के पाठ से होगी। यह निर्णय आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लिया गया है।

जांजगीर में शिक्षा गुणवत्ता सुधार को लेकर कलेक्टर के सख्त निर्देश

जांजगीर के कलेक्टर श्री जन्मेजय महोबे की अध्यक्षता में कलेक्टोरेट सभागार में जिले के प्राचार्यों, विकासखंड शिक्षा अधिकारियों एवं खंड स्रोत समन्वयकों की प्रथम समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में सत्र 2024-25 के कक्षा 10वीं व 12वीं के बोर्ड परीक्षा परिणामों की समीक्षा की गई | साथ ही कमजोर प्रदर्शन करने वाले स्कूलों के प्राचार्यों पर नियमानुसार कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने शिक्षकों की समय पर उपस्थिति, नियमित अध्यापन, मासिक पाठ्यक्रम की पूर्णता और कमजोर विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण पर विशेष जोर दिया।

बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए:

विनोबा एप के माध्यम से शिक्षक एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति दर्ज करना अनिवार्य किया गया।

"एक पेड़ माँ के नाम" योजना को 10 दिनों के भीतर पूर्ण कर ऑनलाइन एंट्री सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

डिजिटल क्लासरूम, अटल टिंकरिंग लैब, पुस्तक और गणवेश वितरण, तथा **जाति प्रमाण पत्र निर्माण** जैसे कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करने की बात कही गई।

करियर गाइडेंस और **कौशल विकास** के माध्यम से विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करने पर बल दिया गया।

पालक-शिक्षक बैठक, सिलेबस का समय पर समापन, पाक्षिक-मासिक **प्रैक्टिस टेस्ट** और **स्पेशल रिवीजन सेशन** को अनिवार्य बनाने की सलाह दी गई।

ब्राइट स्टूडेंट्स के लिए व्यक्तिगत काउंसलिंग की शुरुआत और **35%-55% पासिंग रेट** वाले स्कूलों के लिए विशेष सुधार योजना तैयार करने को कहा गया।

कक्षा शिक्षण के दौरान **एक्टिव रिकॉल** तकनीक, बच्चों की **सुनने की क्षमता** और **लिखने के अभ्यास** पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए गए।

स्कूलों में **लाइब्रेरी की व्यवस्था** और बच्चों को पुस्तक पठन के लिए प्रेरित करने से **पठन कौशल** बढ़ाने की बात कही गई।

कूट प्रश्न 13

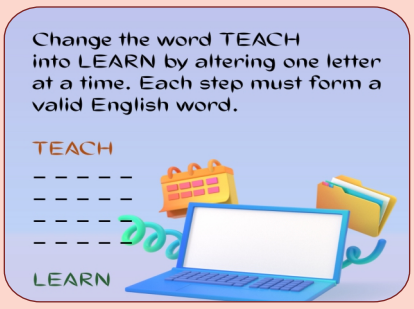

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**